जब क़तअ की मुसाफ़त ए शब आफ़ताब ने

मीर अनीस

1.

जब क़तअ की मुसाफ़त ए शब आफ़ताब ने

जलवा किया सहर के रुख़ ए बेहिजाब ने

देखा सू ए फ़लक शह ए गर्दूं रिकाब ने

मुड़कर सदा रफ़ीक़ों को दी उस जनाब ने

आख़िर है रात हम्द ओ सना ए ख़ुदा करो

उठो फ़रीज़ा ए सहरी को अदा करो

2.

हाँ ग़ाज़ियो ये दिन है जिदाल ओ क़िताल का

याँ ख़ूँ बहेगा आज मुहम्मद की आल का

चेहरा ख़ुशी से सुर्ख़ है ज़हरा के लाल का

गुज़री शब ए फ़िराक़ दिन आया विसाल का

हम वो हैं ग़म करेंगे मलक जिनके वास्ते

रातें तड़प के काटी हैं इस दिन के वास्ते

Commissioned by Daniel Majchrowicz and composed by Zeba Parveen with support from Northwestern University (2024). Based on the Urdu version in *Anis: 111 Marsiye*, Ed. Naiyer Masud and Timsal Masud. Karachi: Aj, 2021.

3.

ये सुबह है वो सुबह मुबारक है जिसकी शाम
याँ से हुआ जो कूच तो है ख़ुल्द में मक़ाम
कौसर पे आबरू से पहुँच जाएं तिश्नाकाम
लिखे ख़ुदा नमाज़ गुज़ारों में सबके नाम
सब हैं वहीद ए अस्र ये ग़ुल चार सू उठे
दुनिया से जो शहीद उठे सुर्ख़ रु उठे

4.

ये सुन के बिस्तरों से उठे वो ख़ुदाशनास
इक इक ने ज़ेब ए जिस्म किया फ़ाख़िरा लिबास
शाने मुहासिनों में किए सबने बेहिरास
बाँधे अमामे आए इमाम ए ज़माँ के पास
रंगीं अबाएँ दोश पे कमरें कसे हुए
मुश्क ओ ज़बाद ओ इत्र में कपड़े बसे हुए

5.

सूखे लबों पे हम्द ए इलाही रुख़ों पे नूर
ख़ौफ़ ओ हिरास ओ रंज ओ कुदूरत दिलों से दूर
फ़य्याज़ हक़ शनास उलुलअज़्म ज़ी शऊर

ख़ुश फ़िक्र ओ बज़लासंज ओ हुनर परवर ओ ग़ुयूर

कानों को हुस्न ए सौत से हज़ बरमला मिले

बातों में वो नमक कि दिलों को मज़ा मिले

6.

सावंत बुर्दबार फ़लक मर्तबत दिलेर

आली मनिश सबा में सुलेमां वग़ा में शेर

गुरदान ए दहर उनकी ज़बरदस्तियों से ज़ेर

फ़ाक़ों में दिल भी चश्म भी और नीयतें भी सेर

दुनिया को हेच ओ पूच सरापा समझते थे

दरियादिली से बहर को क़तरा समझते थे

7.

तक़रीर में वो रम्ज़ ओ किनाया कि लाजवाब

नुक्ता भी मुँह से गर कोई निकला तो इंतिख़ाब

गोया दहन किताब ए बलाग़त का एक बाब

सूखी ज़बानें शहद ए फ़साहत से कामयाब

लहजों पे शायरान ए अरब थे मरे हुए

पिसते लबों के वो जो नमक से भरे हुए

8.

लब पर हंसी गुलों से ज़्यादा शगुफ़्ता रू

पैदा तनों से पैरहन ए यूसुफ़ी की बू

परहेज़गार ओ ज़ाहिद ओ अबरार ओ नेक ख़ू

ग़िल्माँ के दिल में जिनकी ग़ुलामी की आरज़ू

पत्थर में ऐसे लाल सदफ़ में गुहर नहीं

हूरों का क़ौल था ये मलक हैं बशर नहीं

9.

पानी ना था वुज़ू जो करें वो फ़लक जनाब

पर थी रुख़ों पे ख़ाक ए तयम्मुम से तुर्फ़ आब

बारीक अब्र में नज़र आते थे आफ़ताब

होते हैं ख़ाकसार ग़ुलाम ए अबूतुराब

महताब से रुख़ों को सफ़ा और हो गई

मिट्टी से आईनों को जिला और हो गई

10.

ख़ेमे से निकले शह के अज़ीज़ान ए ख़ुशख़िसाल

जिनमें कई थे हज़रत ए ख़ैरुन्निसा के लाल

क़ासिम सा गुलबदन अली अकबर सा ख़ुशजमाल

इक जा अक़ील ओ मुस्लिम ओ जाफ़र के नौनिहाल

सब के रुख़ों का नूर सिपहर ए बरीं पे था

अठारह आफ़ताबों का ग़ुन्चा ज़मीं पे था

11.

वो सुबह और वो छाँव सितारों की और वो नूर

देखे तो ग़श करे अरिनी गोए औज ए तूर

पैदा गुलों से क़ुदरत ए अल्लाह का ज़हूर

वो जा ब जा दरख़्तों पे तस्बीह ख़्वां तुयुर

गुलशन ख़जल थे वादी ए मीनू असास से

जंगल था सब बसा हुआ फूलों की बास से

12.

ठंडी हवा में सब्ज़ा ए सहरा की वो लहक

शरमाए जिससे अतलस ए ज़ंगारी ए फ़लक

वो झूमना दरख़्तों का फूलों की वो महक

हर बर्ग ए गुल पे क़तरा ए शबनम की वो झलक

हीरे ख़जल थे गौहर ए यकता निसार थे

पत्ते भी हर शजर के जवाहर निगार थे

13.

क़ुरबान ए सनअत ए क़लम ए आफ़रीदगार

थी हर वरक़ से सनअत ए तरसी आशकार

आजिज़ है फ़िक्रत ए शोरा ए हुनर शआर

इन सनअतों को पाए कहाँ अक़्ल ए सादाकार

आलम था महव क़ुदरत ए रब ए इबाद पर

मीना क्या था वादी ए मीनू सवाद पर

14.

वो नूर और वो दश्त सुहाना सा वो फ़िज़ा

दराज ओ कब्क ओ तेहूद ओ ताऊस की सदा

वो जोश ए गुल वो नाला ए मुरग़ान ए ख़ुशनवा

सर्दी जिगर को बख़्शाती थी सुबह की हवा

फूलों से सब्ज़ सब्ज़ शजर सुर्ख़ पोश थे

थाले भी नख़्ल के सबद ए गुलफ़रोश थे

15.

वो दश्त वो नसीम के झोंके वो सब्ज़ाज़ार

फूलों पे जा ब जा वो गुहर हाय आबदार

उठना वो झूम झूम के शाख़ों का बार बार

बाला ए नख़ल एक जो बुलबुल तो गुल हज़ार

ख़्वाहां थे नख़्ल ए गुलशन ए ज़हरा जो आब के

शबनम ने भर दिए थे कटोरे गुलाब के

16.

वो क़ुमरियों का चार तरफ़ सरव के हुजूम

कू कू का शोर नाला ए हक़ ए सिर्रा की धूम
सुब्हान रब्बना की सदा थी अली उलउमूम
जारी थे वो जो उनकी इबादत के थे रुसूम
कुछ गुल फ़क़त ना करते थे रब्बे अला की हम्द
हर ख़ार को भी नोक ए ज़बां थी ख़ुदा की हम्द

17.

चियूंटी भी हाथ उठा के ये कहती थी बार बार
ऐ दानाकश ज़ईफ़ों के राज़िक़ तिरे निसार
या हइयो या क़दीर की थी हर तरफ़ पुकार
तहलील थी कहीं कहीं तस्बीह ए किरदगार
ताइर हवा में महव हिरन सब्ज़ाज़ार में
जंगल के शेर हूँक रहे थे कछार में

18.

कांटों में इक तरफ़ थे रियाज़ ए नबी के फूल
ख़ुशबू से जिनकी ख़ुल्द था जंगल का अर्ज़ ओ तूल
दुनिया की ज़ेब ज़ीनत ए काशना ए बतूल
वो बाग़ था लगा गए थे ख़ुद जिसे रसूल
माह ए अज़ा के अशरा ए अव्वल में कट गया
वह बाग़ियों के हाथ से जंगल में कट गया

19.

अल्लाह रे ख़िज़ां के दिन उस बाग़ की बहार

फूले समाते थे ना मुहम्मद के गुलअज़ार

दूल्हा बने हुए थे अजल थी गलों का हार

जागे वो सारी रात के वो नींद का ख़ुमार

राहें तमाम जिस्म की ख़ुशबू से बस गईं

जब मुस्कुराए फूलों की कलियाँ बकस गईं

20.

वो दश्त और वो ख़ेमा ए ज़ंगारगूँ की शान

गोया ज़मीं पे नस्ब था इक ताज़ा आसमान

बेचोबा ए सिपहर ए बरीं जिसका साएबान

बैतुल अतीक़ दीं का मदीना जहां की जान

अल्लाह के हबीब के प्यारे इसी में थे

सब अर्श ए किबरिया के सितारे इसी में थे

21.

गर्दूं पे नाज़ करती थी इस दश्त की ज़मीं

कहता था आसमान ए दहम चर्ख़ ए हफ़्तुमीं

पर्दे थे रश्क ए पर्दा ए चश्मान ए हूर ए ईं

तारों से था फ़लक इसी ख़िरमन का ख़ूशा चीं

देखा जो नूर शम्स ए कैवां जनाब पर

क्या क्या हंसी है सुबह गुल ए आफ़ताब पर

22.

नागाह चर्ख़ पर ख़त ए अब्यज़ हुआ अयाँ

तशरीफ़ जानमाज़ पे लाए शह ए ज़माँ

सज्जादे बिछ गए अक़ब ए शाह ए इंस ओ जां

सौत ए हसन से अकबर ए मह रू ने दी अज़ां

हर इक की चश्म आँसुओं से डबडबा गई

गोया सदा रसूल की कानों में आ गई

23.

चुप थे तुयूर झूमते थे वज्द में शजर

तस्बीह ख़्वाँ थे बर्ग ओ गुल ओ ग़ुन्चा ओ समर

महव ए सना कुलूख़ ओ नबातात ओ दश्त ओ दर

पानी से मुँह निकाले थे दरिया के जानवर

एजाज़ था कि दिलबर ए शब्बीर की सदा

हर ख़ुश्क ओ तर से आती थी तकबीर की सदा

24.

नामूस ए शाह रोते थे ख़ेमे में ज़ार ज़ार

चुपकी खड़ी थी सेहन में बानू ए नामदार

ज़ैनब बालाएं ले के ये कहती थी बार बार

सदक़े नमाज़ियों के मोअज़्ज़िन के मैं निसार

करते हैं यूं सना ओ सिफ़त ज़ुलजलाल की

लोगो अज़ां सुनो मिरे यूसुफ़ जमाल की

25.

ये हुस्न ए सौत और ये क़िरअत ये शद ओ मद

हक़्क़ा कि अफ़सहुल फ़ुसहा है इन्हीं का जद्द

गोया है लहन ए हज़रत ए दाऊद बा ख़िरद

या रब रख इस सदा को ज़माने में ता अबद

शोबे सदा में पंखुड़ियां जैसे फूल में

बुलबुल चहक रहा है रियाज़ ए रसूल में

26.

मेरी तरफ़ से कोई बालाएं तो लेने जाए

ऐन उल कमाल से तुझे बच्चे ख़ुदा बचाए

वो लू ज़ई कि जिसकी तलाक़त दिलों को भाए

दो दो दिन एक बूँद भी पानी की वो ना पाए

ग़ुर्बत में पड़ गई है मुसीबत हुसैन पर

फ़ाक़ा ये तीसरा है मिरे नूर ए ऐन पर

27.

सफ़ में हुआ जो नारा ए क़द क़ामतिस्सलावात

क़ायम हुई नमाज़ उठे शाह ए कायनात

वो नूर की सफ़ें वो मुसल्ला मलक सिफ़ात

क़दमों से जिनके मलती थी आँखें रह ए निजात

जलवा था ता बा अर्श ए मुअल्ला हुसैन का

मुसहफ़ की लौह थी कि मुसल्ला हुसैन का

28.

क़ुरआं खुला हुआ कि जमाअत की थी नमाज़

बिस्मिल्लाह जैसे आगे हो यूँ थे शह ए हिजाज़

सतरें थीं या सफ़ें अक़ब ए शाह ए सरफ़राज़

करती थी ख़ुद नमाज़ भी उनकी अदा पे नाज़

सदक़े सहर बयाज़ पे बैनुस्सुतूर की

सब आयतें थीं मुसहफ़ ए नातिक़ के नूर की

29.

बाहम मुकब्बिरों की सदाएं वह दिलपसंद

करुं बयान ए अर्श थे सब जिससे बहरामंद

इमां का नूर चेहरों पे था चाँद से दो चंद

ख़ौफ़ ए ख़ुदा से कांपते थे सबके बंद बंद

ख़म गर्दनें थीं सबकी ख़ुज़ू ओ ख़ुशू में

सजदों में चाँद थे मह ए नौ थे रुकू में

30.

इक सफ़ में सब मुहम्मद ओ हैदर के रिश्तेदार

अठारह नौजवां हैं अगर कीजिए शुमार

पर सब वहीद असर ओ हक़ आगाह ओ ख़ाकसार

पैरो इमाम ए पाक के दाना ए रोज़गार

तस्बीह हर तरफ़ तह ए अफ़्लाक उन्हीं की है

जिस पर दुरुद पढ़ते हैं ये ख़ाक उन्हीं की है

31.

दुनिया से उठ गया वो क़याम और वो क़ूऊद

उनके लिए थी बंदगी ए वाजिब उल वजूद

वो उज्ज़ वो तवील रुकू और वो सुजूद

ताअत में नीस्त जानते थे अपनी हस्त ओ बूद

ताक़त ना चलने फिरने की थी हाथ पांव में

गिर गिर के सजदे कर गए तेग़ों की छांव में

32.

हाथ उनके जब क़ुनूत में उठे सू ए ख़ुदा

ख़ुद हो गए फ़लक पे इजाबत के बाब वा

थर्राए आसमान हिला अर्श ए किबरिया

शहपर थे दोनों हाथ पय ताइर ए दुआ

वो ख़ाकसार महव ए तज़र्रू थे फ़र्श पर

रूहुल क़ुदुस की तरह दुआएं थीं अर्श पर

33.

फ़ारिग़ हुए नमाज़ से जब क़िब्ला ए अनाम

आए मुसाफ़े को जो जवानान ए तिश्नाकाम

चूमे किसी ने दस्त ए शहंशाह ए ख़ास ओ आम

आँखें मलीं किसी ने क़दम पर बा एहतिराम

क्या दिल थे क्या सिपाह ए रशीद ओ सईद थी

बाहम मुआनक़े थे कि मरने की ईद थी

34.

सजदे में शुक्र के था कोई मर्द ए बा ख़ुदा

पढ़ता था कोई हुज़्न से क़ुरआँ की दुआ

नात ए नबी कहीं थी कहीं हम्द ए किबरिया

मौला उठा के हाथ ये करते थे इल्तिजा

फ़ाक़ों में तिश्नाकामी ओ ग़ुरबत पे रहम कर

या रब मुसाफ़िरों की जमाअत पे रहम कर

35.

ज़ारी थी इल्तिजा थी मुनाजात थी इधर

वां सफ़कशी ओ ज़ुल्म ओ तअद्दी ओ शोर ओ शर

कहता था इब्न ए साद यह जा जा के नहर पर

घाटों से होशियार तराई से बा ख़बर

दो रोज़ से है तिश्ना दहानी हुसैन को

हाँ मरते दम भी दीजियो न पानी हुसैन को

36.

बैठे थे जानमाज़ पे शाह ए फ़लक सरीर

नागाह क़रीब आके गिरे तीन चार तीर

देखा हर इक ने मुड़के सू ए लश्कर ए शरीर

अब्बास उठे तौल के शमशीर ए बेनज़ीर

परवाना थे सिराज ए इमामत के नूर पर

रोकी सिपर हुज़ूर ए करामत ज़हूर पर

37.

अकबर से मुड़के कहने लगे सरवर ए ज़माँ

बाँधे है सरकशी पे कमर लश्कर ए गिरां

तुम जाके कह दो ख़ेमे में ये ऐ पिदर की जां

बच्चों को ले के सेहन से हट जाएं बीबियाँ

ग़फ़लत में तीर से कोई बच्चा तलफ़ ना हो

डर है मुझे कि गर्दन ए असग़र हदफ़ ना हो

38.

कहते थे ये पिसर से शह ए आसमां सरीर
फ़िज़्ज़ा पुकारी डयोढ़ी से ऐ ख़ल्क़ के अमीर
है है अली की बेटियां किस जा हों गोशागीर
असग़र के गाहवारे तक आकर गिरे हैं तीर
गर्मी में सारी रात ये घुट घुट के रोए हैं
बच्चे अभी तो सर्द हवा पा के सोए हैं

39.

बाक़र कहीं पड़ा है सकीना कहीं है ग़श
गर्मी की फ़सल ये तब ओ ताब और ये अतश
रो रो के सो गए हैं सग़ीरान ए माह वश
बच्चों को ले के याँ से कहाँ जाएं फ़ाक़ाकश
ये किस ख़ता पे तीर पया पय बरसते हैं
ठंडी हवा के वास्ते बच्चे तरसते हैं

40.

उठे ये शोर सुन के इमाम ए फ़लक वक़ार
डयोढ़ी तक आए ढालों को रोके रफ़ीक़ ओ यार
फ़रमाया मुड़ के चलते हैं अब बहर ए कारज़ार
कमरें कसो जिहाद पे मँगवाओ राहवार

देखें फ़ज़ा बहिश्त की दिल बाग़ बाग़ हो

उम्मत के काम से कहीं जल्दी फ़राग़ हो

41.

फ़रमा के ये हरम में गए शाह ए बहर ओ बर

होने लगीं सफ़ों में कमर बंदियां उधर

जौशन पहन के हज़रत ए अब्बास ए नामवर

दरवाज़े पर टहलने लगे मिस्ल ए शेर ए नर

परतव से रुख़ के बर्क़ चमकती थी ख़ाक पर

तलवार हाथ में थी सिपर दोश ए पाक पर

42.

शौकत में रश्क ए ताज ए सुलेमां था ख़ुद ए सर

कलग़ी पे लाख बार तसद्दुक़ हुमा के पर

दस्ताने दोनों फ़तह के मस्कन ज़फ़र के घर

वो रोब उलअमां वो तहूर कि अलहज़र

जब ऐसा भाई ज़ुल्म की तेग़ों में आड़ हो

फिर किस तरह ना भाई की छाती पहाड़ हो

43.

ख़ेमे में जा के शह ने ये देखा हरम का हाल

चेहरे तो फ़क़ हैं और खुले हैं सरों के बाल

ज़ैनब की ये दुआ है कि ऐ रब्बे ज़ुलजलाल

बच जाये इस फ़साद से ख़ैरुन्निसा का लाल

बानू ए नेक नाम की खेती हरी रहे

संदल से मांग बच्चों से गोदी भरी रहे

44.

आफ़त में है मुसाफ़िर ए सहरा ए कर्बला

बेकस पे ये चढ़ाई है सय्यद पे ये जफ़ा

ग़ुर्बत में ठन गई जो लड़ाई तो होगा क्या

इन नन्हे नन्हे बच्चों पे कर रहम ऐ ख़ुदा

फ़ाक़ों से जाँ ब लब हैं अतश से हलाक हैं

या रब तिरे रसूल की ये आल ए पाक हैं

45.

सर पर ना अब अली ना रसूल ए फ़लक वक़ार

घर लुट गया गुज़र गईं ख़ातून ए रोज़गार

अम्मां के बाद रोई हसन को मैं सोगवार

दुनिया में अब हुसैन है इन सबकी यादगार

तू दाद दे मिरि कि अदालत पनाह है

कुछ उस पे बन गई तो ये मजमा तबाह है

46.

बोले क़रीब जा के शह ए आसमाँ जनाब

मुज़्तर ना हो दुआएं हैं तुम सबकी मुस्तजाब

मग़रूर हैं ख़ता पे हैं ये ख़ानमाँ ख़राब

ख़ुद जा के मैं दिखाता हूँ इनको रह ए सवाब

मौक़ा नहीं बहन अभी फ़रियाद ओ आह का

लाओ तबर्रुकात रिसालत पनाह का

47.

मेराज में रसूल ने पहना था जो लिबास

कश्ती में लाईं ज़ैनब उसे शाह ए दीं के पास

सर पर रखा अमामा ए सरदार ए हक़ शनास

पहनी क़बा ए पाक ए रसूल ए फ़लक असास

बर में दरुस्त ओ चुस्त था जामा रसूल का

रूमाल फ़ातिमा का अमामा रसूल का

48.

शमले दो सिरे जो छूटे थे ब सद वक़ार

साबित ये था कि दोश पे गेसू पड़े हैं चार

बल खा रहा था ज़ुल्फ़ ए समन बू का तार तार

जिसके हर एक मू पे ख़ता ओ ख़ुतन निसार

मुश्क ओ अबीर ओ ऊद अगर हैं तो हेच हैं

सुंबुल पे क्या खुलेंगे ये गेसू के पेच हैं

49.

कपड़ों से आ रही थी रसूल ए ज़मन की बू
दूल्हा ने सूंघी होगी ना ऐसी दुल्हन की बू
हैदर की फ़ातिमा की हुसैन ओ हसन की बू
फैली हुई थी चार तरफ़ पंजतन की बू
लुटता था इतर वादी ए अंबर सरिश्त में
गुल झूमते थे बाग़ में रिज़वाँ बहिश्त में

50.

पोशाक सब पहन चुके जिस दम शह ए ज़मन
लेकर बालाएं भाई की रोने लगी बहन
चिल्लाई हाय आज नहीं हैदर ओ हसन
अम्मां कहाँ से लाए तुम्हें अब ये बे वतन
रुख़स्त है अब रसूल के यूसुफ़ जमाल की
सदक़े गई बालाएं तो लो अपने लाल की

51.

संदूक़ असलहे के जो खुलवाए शाह ने
पीटा मुँह अपना ज़ैनब ए इस्मत पनाह ने
पहनी ज़िरह इमाम ए फ़लक बारगाह ने

बाज़ू पे जौशनैन पढ़े उज़ ओ जाह ने

जौहर बदन के हुस्न से सारे चमक गए

हलक़े थे जितने उतने सितारे चमक गए

52.

याद आ गए अली नज़र आई जो ज़ुल्फ़िक़ार

क़ब्ज़े को चूम कर शह ए दीं रोए ज़ार ज़ार

तौली जो ले के हाथ में शमशीर ए आबदार

शौकत ने दी सदा कि तिरी शान के निसार

फ़तह ओ ज़फ़र क़रीब हो नुसरत क़रीब हो

ज़ेब इसकी तुझको ज़र्ब अदू को नसीब हो

53.

बाँधी कमर से तेग़ जो ज़हरा के लाल ने

फाड़ा फ़लक पे अपना गिरेबां हिलाल ने

दस्ताने पहने सरवर ए क़ुदसी ख़िसाल ने

मेराज पाई दोश पे हमज़ा की ढाल ने

रुत्बा बलंद था कि सआदत निशान थी

सारी सिपर में मेहर ए नबूवत की शान थी

54.

हथियार इधर लगा चुके आक़ा ए ख़ास ओ आम

तैयार उधर हुआ अलम ए सय्यदुल अनाम
खोले सरों को गिर्द थी सय्यदानियाँ तमाम
रोती थी थामे चोब ए अलम ख़्वाहर ए इमाम
तेग़ें कमर में दोश पे शमले पड़े हुए
ज़ैनब के लाल ज़ेर ए अलम आ खड़े हुए

55.

गर्दाने दामनों को क़बा के वो गुल अज़ार
मिर्फ़क़ तक आस्तीनों को उल्टे ब सद वक़ार
जाफ़र का रोब दबदबा ए शेर ए किरदगार
बूटा से उनके क़द पे नमूदार ओ नामदार
आँखें मलीं अलम से फरहरे को चूम के
राएत के गिर्द फिरने लगे झूम झूम के

56.

गह माँ को देखते थे कभी जानिब ए अलम
नारा कभी ये था कि निसार ए शह ए उमम
करते थे दोनों भाई कभी मश्वरे बहम
आहिस्ता पूछते कभी माँ से वो ज़ी हशम
क्या क़स्द है अली ए वली के निशान का
अम्मां किसे मिलेगा अलम नानाजान का

57.

कुछ मश्वरा करें जो शहंशाह ए ख़ुश ख़िसाल
हम भी मुहिक़ हैं आपको इसका रहे ख़्याल
पास ए अदब से अर्ज़ की हमको नहीं मजाल
इसका भी ख़ौफ़ है कि ना हो आपको मलाल
आक़ा के हम ग़ुलाम हैं और जां निसार हैं
इज़्ज़त तलब हैं नाम के उम्मीदवार हैं

58.

बेमिस्ल थे रसूल के लश्कर के सब जवाँ
लेकिन हमारे जद्द को नबी ने दिया निशाँ
ख़ैबर में देखता रहा मुँह लश्कर ए गिरां
पाया मगर अली ने अलम वक़्त ए इम्तिहाँ
ताक़त में कुछ कमी नहीं गो भूके प्यासे हैं
पोते उन्हीं के हम हैं उन्हीं के नवासे हैं

59.

ज़ैनब ने तब कहा कि तुम्हें इससे क्या है काम
क्या दख़ल मुझको मालिक ओ मुख़तार हैं इमाम
देखो ना कीजियो बे अदबाना कोई कलाम
बिगड़ूंगी मैं जो लोगे ज़बां से अलम का नाम

लो जाओ बस खड़े हो अलग हाथ जोड़ के

क्यों आए हो यहां अली अकबर को छोड़ के

60.

सरको हटो बढ़ो ना खड़े हो अलम के पास

ऐसा ना हो कि देख लें शाह ए फ़लक असास

खोते हो और आए हुए तुम मिरे हवास

बस क़ाबिल ए क़बूल नहीं है ये इल्तिमास

रोने लगोगे फिर जो बुरा या भला कहूं

इस ज़िद को बचपने के सिवा और क्या कहूं

61.

उमरें क़लील और हवस ए मन्सब ए जलील

अच्छा निकालो क़द के भी बढ़ने की कुछ सबील

माँ सदक़े जाये गरचे ये हिम्मत की है दलील

हाँ अपने हम सिनों में तुम्हारा नहीं अदील

लाज़िम है सोचे ग़ौर करे पेश ओ पस करे

जो हो सके ना क्यों बशर उसकी हवस करे

62.

इन नन्हे नन्हे हाथों से उठेगा ये अलम

छोटे क़दों में सबसे सिनों में सभों से कम

निकलें तनों से सिब्त ए नबी के क़दम पे क़दम

ओहदा यही है बस यही मन्सब यही हशम

रुख़सत तलब अगर हो तो ये मेरा काम है

माँ सदक़े जाये आज तो मरने में नाम है

63.

फिर तुमको क्या बुज़ुर्ग थे गर फ़ख्र ए रोज़गार

ज़ेबा नहीं है वस्फ़ ए इज़ाफ़ी पे इफ़्तिख़ार

जौहर वो हैं जो तेग़ करे आप आशकार

दिखला दो आज हैदर ओ जाफ़र की कारज़ार

तुम क्यों कहो कि लाल ख़ुदा के वली के हैं

फ़ौजें पुकारें ख़ुद कि नवासे अली के हैं

64.

क्या कुछ अलम से जाफ़र ए तय्यार का था नाम

ये भी थी इक अता ए रसूल ए फ़लक मक़ाम

बिगड़ी लड़ाईयों में बन आए इन्हीं से काम

जब खींचते थे तेग़ तो हिलता था रुम ओ शाम

बेजाँ हुए तो नख़ल ए वग़ा ने समर दिए

हाथों के बदले हक़ ने जवाहर के पर दिए

65.

लश्कर ने तीन रोज़ हज़ीमत उठाई जब
बख़्शा अलम रसूल ए ख़ुदा ने अली को तब
मर्हब को क़त्ल करके बढ़ा जब वो शेर ए रब
दर बंद करके क़िले का भागी सिपाह सब
उखड़ा वो यूं गिरां था जो दर संग ए सख़्त से
जिस तरह तोड़ ले कोई पत्ता दरख़्त से

66.

नर्ग़े में तीन दिन से है मुश्किलकुशा का लाल
अम्मां का बाग़ होता है जंगल में पायमाल
पूछा ना ये कि खोले हैं क्यों तुमने सर के बाल
मैं लुट रही हूँ और तुम्हें मन्सब का है ख़्याल
ग़म ख़्वार तुम मिरे हो ना आशिक़ इमाम के
मालूम हो गया मुझे तालिब हो नाम के

67.

हाथों को जोड़ जोड़ के बोले वो लाला फ़ाम
ग़ुस्से को आप थाम लें ऐ ख़्वाहर ए इमाम
वल्लाह क्या मजाल जो लें अब अलम का नाम
खुल जाएगा लड़ेंगे जो ये बा वफ़ा ग़ुलाम
फ़ौजें भगा के गंज ए शहीदां में सोएंगे

तब क़द्र होगी आपको जब हम ना होवेंगे

68.

ये कह के बस हटे जो सआदत निशाँ पिसर

छाती भर आई माँ की कहा थाम कर जिगर

देते हो अपने मरने की प्यारो मुझे ख़बर

ठहरो ज़रा बालाएं तो ले ले ये नौहागर

क्या सदक़े जाऊं माँ की नसीहत बुरी लगी

बच्चो ये क्या कहा कि जिगर पर छुरी लगी

69.

ज़ैनब के पास आके ये बोले शह ए ज़मन

क्यों तुमने दोनों बेटों को बातें सुनीं बहन

शेरों के शेर आक़िल ओ जर्रार ओ सफ़ शिकन

ज़ैनब वहीद ए अस्र हैं दोनों ये गुल बदन

यूं देखने को सब में बुज़ुर्गों के तौर हैं

तेवर ही इनके और इरादे ही और हैं

70.

नौ दस बरस के सिन में ये जुरात ये वलवले

बच्चे किसी ने देखे हैं ऐसे भी मनचले

इक़बाल क्यूँ कर इनके ना क़दमों से मुँह मले

किस गोद में बड़े हुए किस दूध से पले

बेशक ये विरसादार ए जनाब ए अमीर हैं

पर क्या करूँ कि दोनों की उम्रें सग़ीर हैं

71.

अब तुम जिसे कहो उसे दें फ़ौज का अलम

की अर्ज़ जो सलाह ए शह ए आसमां हशम

फ़रमाया जब से उठ गईं ज़हरा ए बा करम

उस दिन से तुमको माँ की जगह जानते हैं हम

मालिक हो तुम बुज़ुर्ग कोई हो कि ख़ुर्द हो

जिसे कहो उसी को ये ओहदा सुपुर्द हो

72.

बोली बहन कि आप भी तो लें किसी का नाम

है किस तरफ़ तवज्जा ए सरदार ए ख़ास ओ आम

क़ुरआँ के बाद है तो है बस आपका कलाम

गर मुझसे पूछते हैं शह ए आसमां मक़ाम

शौकत में क़द में शान में हमसर कोई नहीं

अब्बास ए नामदार से बेहतर कोई नहीं

73.

आशिक़ ग़ुलाम ख़ादिम ए दैरीना जांनिसार

फ़रज़न्द भाई ज़ीनत ए पहलू वफ़ाशआर

राहत रसाँ मुतीअ ओ नमूदार ओ नामदार

जर्रार यादगार ए पिदर फ़ख़्र ए रोज़गार

सफ़दर है शेर दिल है बहादुर है नेक है

बेमिस्ल सैकड़ों में हज़ारों में एक है

74.

आँखों में अश्क भर के ये बोले शह ए ज़मन

हाँ थी यही अली की वसीयत भी ऐ बहन

अच्छा बुलाएं आप किधर है वो सफ़शिकन

अकबर चचा के पास गए सुन के ये सुख़न

की अर्ज़ इंतिज़ार है शाह ए ग़यूर को

चलिए फुफी ने याद किया है हुज़ूर को

75.

अब्बास आए हाथों को जोड़े हुज़ूर ए शाह

जाओ बहन के पास ये बोला वो दीं पनाह

ज़ैनब वहीं अलम लिए आयीं बा इज़ ओ जाह

बोले निशाँ को ले के शह ए अर्श बारगाह

इनकी ख़ुशी वो है जो रज़ा पंजतन की है

लो भाई लो अलम ये इनायत बहन की है

76.

रख कर अलम पे हाथ झुका वो फ़लक वक़ार
हमशीर के क़दम पे मला मुँह बा इफ़्तिख़ार
ज़ैनब बलाएं ले के ये बोलीं कि मैं निसार
अब्बास फ़ातिमा की कमाई से होशियार
हो जाये आज सुलह की सूरत तो कल चलो
इन आफ़तों से भाई को लेकर निकल चलो

77.

की अर्ज़ मेरे जिस्म पे जिस वक़्त तक है सर
मुमकिन नहीं है यह कि बढ़े फ़ौज ए बद गुहर
तेग़ें खिंचें जो लाख तो सीना करूँ सिपर
देखें उठा के आँख ये क्या ताब क्या जिगर
सावंत हैं पिसर असद ए ज़ुलजलाल के
गर शेर हो तो फेंक दूँ आँखें निकाल के

78.

मुँह कर के सू ए क़ब्र ए अली फिर किया ख़िताब
ज़र्रे को आज कर दिया मौला ने आफ़ताब
ये अर्ज़ ख़ाकसार की है या अबूतुराब
आक़ा के आगे हूँ मैं शहादत से कामयाब

सर तन से इब्न ए फ़ातिमा के रू ब रू गिरे

शब्बीर के पसीने पे मेरा लहू गिरे

79.

ये सुन के आई ज़ौजा ए अब्बास ए नामवर

शौहर की सिम्त पहले कनखियों से की नज़र

लीं सिब्त ए मुस्तफ़ा की बलाएं बा चश्म ए तर

ज़ैनब के गिर्द फिर के ये बोली वो नौहागर

फ़ैज़ आपका है और तसद्दुक़ इमाम का

इज़्ज़त बढ़ी कनीज़ की रुत्बा ग़ुलाम का

80.

सर को लगा के छाती से ज़ैनब ने ये कहा

तू अपनी मांग कोख से ठंडी रहे सदा

की अर्ज़ मुझ सी लाख कनीज़ें हों तो फ़िदा

बानू ए नामवर को सुहागन रखे ख़ुदा

बच्चे जियें तरक़्क़ी ए इक़बाल ओ जाह हो

साये में आपके अली अकबर का ब्याह हो

81.

क़िस्मत वतन में ख़ैर से फिर सबको ले के जाए

यसरिब में शोर हो कि सफ़र से हुसैन आए

उम्मुलबनीन जाह ओ हशम से पिसर को पाए

जल्दी शब ए उरूसी ए अकबर ख़ुदा दिखाए

मेहंदी तुम्हारा लाल मले हाथ पांव में

लाओ दुल्हन को ब्याह के तारों की छाँव में

82.

नागाह आ के बाली सकीना ने ये कहा

कैसा है ये हुजूम किधर हैं मिरे चचा

ओहदा अलम का उनको मुबारक करे ख़ुदा

लोगो मुझे बालाएं तो लेने दो इक ज़रा

शौकत ख़ुदा बढ़ाए मिरे अम्मू जान की

मैं भी तो देखूं शान अली के निशान की

83.

अब्बास मुस्कुरा के पुकारे कि आओ आओ

अम्मू निसार प्यास से क्या हाल है बताओ

बोली लिपट के वो कि मिरी मशक लेते जाओ

अब तो अलम मिला तुम्हें पानी मुझे पिलाओ

तोहफ़ा ना कोई दीजिए ना इनाम दीजिए

क़ुर्बान जाऊं पानी का इक जाम दीजिए

84.

बातों पे उसकी रोती थीं सय्यदानियाँ तमाम

की अर्ज़ आके इब्न ए हसन ने कि या इमाम

अंबोह है बढ़ी चली आती है फ़ौज ए शाम

फ़रमाया आपने कि नहीं फ़िक्र का मक़ाम

अब्बास अब अलम लिए बाहर निकलते हैं

ठहरो बहन से मिल के गले हम भी चलते हैं

85.

नागाह बढ़े अलम लिए अब्बास ए बावफ़ा

दौड़े सब अहल ए बैत खुले सर बरहना पा

हज़रत ने हाथ उठा के ये इक एक से कहा

लो अलविदा ऐ हरम ए पाक ए मुस्तफ़ा

सुबह ए शब ए फ़िराक़ है प्यारों को देख लो

सब मिल के डूबते हुए तारों को देख लो

86.

शह के क़दम पे ज़ैनब ए ज़ार ओ हज़ीं गिरी

बानू पछाड़ खा के पिसर के क़रीं गिरी

कुलसूम थरथरा के ब रु ए ज़मीं गिरी

बाक़र कहीं गिरा तो सकीना कहीं गिरी

उजड़ा चमन हर इक गुल ए ताज़ा निकल गया

निकला अलम कि घर से जनाज़ा निकल गया

87.

देखी जो शान ए हज़रत ए अब्बास ए अर्श जाह

आगे हुई अलम के पस अज़ तहनियत सिपाह

निकला हरम सरा से दो आलम का बादशाह

नश्तर ब दिल थी बिंत ए अली की फ़ुग़ा ओ आह

रह रह के अश्क बहते थे रु ए जनाब से

शबनम टपक रही थी गुल ए आफ़ताब से

88.

मौला चढ़े फ़रस पे मुहम्मद की शान से

तरकश लगाया हरने पे किस आन बान से

निकला ये जिन्न ओ इंस ओ मलक की ज़बान से

उतरा है फिर ज़मीं पे बुराक़ आसमान से

सारा चलन ख़िराम में कब्क ए दरी का है

घूँघट नई दुल्हन का है चेहरा परी का है

89.

ग़ुस्से में अंखड़ियों के उबलने को देखिए

बन बन के झूम झूम के चलने को देखिए

साँचे में जोड़ बंद के ढलने को देखिए

थम कर कनौतियों के बदलने को देखिए

गर्दन में डालें हाथ ये परियों को शौक़ है

बालादवी में इसको हुमा पर भी फ़ौक़ है

90.

थम कर हवा चली फ़रस ए ख़ुश क़दम बढ़ा

जूं जूं वो सू ए दश्त बढ़ा और दम बढ़ा

घोड़ों की लीं सवारों ने बागें अलम बढ़ा

रायत बढ़ा कि सर्व ए रियाज़ ए इरम बढ़ा

फूलों को ले के बाद ए बहारी पहुंच गई

बुस्तान ए कर्बला में सवारी पहुंच गई

91.

पंजा इधर चमकता था और आफ़ताब उधर

इसकी ज़िया थी ख़ाक पे ज़ौ उसकी अर्श पर

ज़र रेज़ी ए अलम पे ठहरती ना थी नज़र

दूल्हा का रुख़ था सोने के सेहरे में जलवागर

थे दो तरफ़ जो दो अलम इस इर्तिफ़ा के

उलझे हुए थे तार ख़ुतूत ए शोआ के

92.

अल्लाह रे सिपाह ए ख़ुदा की शिकोह ओ शां

झुकने लगे जुनूद ए ज़लालत के भी निशां

कमरें कसे अलम के तले हाशमी जवां

दुनिया की ज़ेब दीन की इज़्ज़त जहां की जां

एक एक दूदमान ए अली का चिराग़ था

जिसको बहिश्त पर था तफ़व्वुक़ वो बाग़ था

93.

लड़के वो सात आठ सही क़द समन अज़ार

गेसू किसी के चेहरे पे दो और किसी के चार

हैदर का रोब नरगिसी आँखों से आश्कार

खेलें जो नीमचों से करें शेर को शिकार

तीरों की सिम्त चांद से सीने तने हुए

आए थे क़त्लगाह में दूल्हा बने हुए

94.

ग़ुरफ़ों से हूरें देख के करती थीं ये कलाम

दुनिया का बाग़ भी है अजब पुरफ़िज़ा मक़ाम

देखो दुरूद पढ़ के सू ए लश्कर ए इमाम

हमशक्ल ए मुस्तफ़ा है यही अर्श एहतिशाम

रायत लिए वो लाल ख़ुदा के वली का है

अब तक जहां में साथ नबी ओ अली का है

95.

दुनिया से उठ गए थे जो पैग़म्बर ए ज़माँ
हम जानते थे हुस्न से ख़ाली है अब जहां
क्योंकर सू ए ज़मीं ना झुके पीर ए आसमां
पैदा किया है हक़ ने अजब हुस्न का जवाँ
सब ख़ूबियों का ख़ात्मा बस इस हसीं पे है
महबूब ए हक़ हैं अर्श पे साया ज़मीं पे है

96.

नागाह तीर उधर से चले जानिब ए इमाम
घोड़ा बढ़ा के आपने हुज्जत भी की तमाम
निकले इधर से शह के रफ़ीक़ान ए तिश्नाकाम
बेसर हुए परों में सरान ए सिपाह ए शाम
बाला कभी थी तेग़ कभी ज़ेर ए तंग थी
एक इक की जंग मालिक ए उश्तुर की जंग थी

97.

निकले पय जिहाद अज़ीज़ान ए शाह ए दीं
नारे किए कि ख़ौफ़ से हिलने लगी ज़मीं
रूबाहों की सफ़ों पे चले शेर ए ख़श्मगीं
खींची जो तेग़ भूल गए सफ़कशी लईं

बिजली गिरी परों पे शुमाल ओ जुनूब के

क्या क्या लड़े हैं शाम के बादल में डूब के

98.

अल्लाह रे अली के नवासों की कारज़ार

दोनों के नीमचे थे कि चलती थी ज़ुल्फ़िक़ार

शाना कटा किसी ने जो रोका सिपर पे वार

गिनती थी ज़ख़्मियों की ना कुश्तों का था शुमार

इतने सवार क़त्ल किए थोड़ी देर में

दोनों के घोड़े छुप गए लाशों के ढेर में

99.

वो छोटे छोटे हाथ वो गोरी कलाईयां

आफ़त की फुर्तियां थीं ग़ज़ब की सफ़ाईयां

डर डर के काटते थे कमां कश कनाईयां

फ़ौजों में थीं नबी ओ अली की दुहाईयां

तस्वीर हू ब हू थे जनाब ए अमीर की

ताक़त दिखा दी शेरों ने ज़ैनब के शीर की

100.

किस हुस्न से हसन का जवान ए हसीं लड़ा

घिर घिर के सूरत ए असद ए ख़श्मगीं लड़ा

दो दिन की भूख प्यास में वो माहजबीं लड़ा

सेहरा उलट के यूं कोई दूल्हा नहीं लड़ा

हमले दिखा दिए असद ए किरदगार के

मक़तल में सू ए अरज़क़ ए शामी को मार के

101.

चमकी जो तेग़ हज़रत ए अब्बास ए अर्श जाह

रूहुल अमीं पुकारे कि अल्लाह की पनाह

ढालों में छिप गया पिसर ए साद ए रू स्याह

कुश्तों से बंद हो गयी अमन ओ अमां की राह

झपटा जो शेर शौक़ में दरिया की सैर के

ले ली तराई तेग़ों की मौजों को पैर के

102.

बेसर हुए मुवक्किल ए सर चश्मा ए फ़ुरात

हलचल में मिस्ल ए मौज सफ़ों को ना था सबात

दरिया में गिर के फ़ौत हुए कितने बद सिफ़ात

गोया हुबाब हो गए थे नुक़्ता ए हयात

अब्बास भर के मशक को यूँ तिश्नालब लड़े

जिस तरह नहरवां में अमीर ए अरब लड़े

103.

आफ़त थी हर्ब ओ ज़र्ब ए अली अकबर ए दिलेर
ग़ुस्से में झपटे सैद पे जैसे गुर्सना शेर
सब सर बलंद पस्त ज़बरदस्त सब थे ज़ेर
जंगल में चार सिम्त हुए ज़ख़्मियों के ढेर
सर उनके उतरे तन से जो थे रन चढ़े हुए
अब्बास से भी जंग में थे कुछ बढ़े हुए

104.

तलवारें बरसीं सुबह से निस्फ़ुन्नहार तक
हिलती रही ज़मीन लरज़ते रहे फ़लक
काँपा किए परों को समेटे हुए मलक
नारे ना फिर वो थे ना वो तेग़ों की थी चमक
ढालों का दौर बर्छियों का औज हो गया
हंगाम ए ज़ोहर ख़ात्मा ए फ़ौज हो गया

105.

लाशे सभों के सब्त ए नबी ख़ुद उठा के लाए
क़ातिल किसी शहीद का सर काटने ना पाए
दुश्मन को भी ना दोस्त की फ़ुर्क़त ख़ुदा दिखाए
फ़रमाते थे बिछड़ गए सब हम से हाय हाय

इतने पहाड़ गिर पड़ें जिस पर वो ख़म ना हो

गर सौ बरस जियूं तो ये मजमा बहम ना हो

106.

लाशे तो सब के गिर्द थे और बीच में इमाम

डूबी हुई थी ख़ूँ में नबी की क़बा तमाम

अफ़्सुर्दा ओ हज़ीन ओ परेशान ओ तिश्नाकाम

बरछी थी दिल को फ़तह के बाजों की धूमधाम

आदा किसी शहीद का जब नाम लेते थे

थर्रा के दोनों हाथों से दिल थाम लेते थे

107.

पूछो उसी से जिसके जिगर पर हों इतने दाग़

इक उम्र का रियाज़ था जिस पर लुटा वो बाग़

फ़ुर्सत ना अब बुका से न मातम से अनफ़राग़

जो घर की रोशनी थे वो गुल हो गए चराग़

पड़ती थी धूप सब के तन ए पाश पाश पर

चादर भी इक ना थी अली अकबर की लाश पर

108.

मक़तल से आए ख़ेमा के दर पर शह ए ज़मन

पुरशिद्दत ए अतश से ना थी ताक़त ए सुख़न

पर्दे पे हाथ रख के पुकारे ब सद मेहन

असग़र को गाहवारे से ले आओ ऐ बहन

फिर एक बार इस मह ए अनवर को देख लें

अकबर के शीर ख़्वार बिरादर को देख लें

109.

ख़ेमे से दौड़े आल ए मुहम्मद बरहना सर

असग़र को लाईं हाथों पे बानू ए नौहागर

बच्चे को ले के बैठ गए आप ख़ाक पर

मुँह से मले जो होंठ तो चौंका वो सीमबर

ग़म की छुरी चली जिगर ए चाक चाक पर

बिठला लिया हुसैन ने ज़ानू ए पाक पर

110.

बच्चे से मुल्तफ़ित थे शह ए आसमां सरीर

था उस तरफ़ कमीं में बन ए काहिल ए शरीर

मारा जो तीन भाल का उस बेहया ने तीर

बस दफ़अतन निशाना हुई गर्दन ए सग़ीर

तड़पा जो शीरख़्वार तो हज़रत ने आह की

मासूम ज़बह हो गया गोदी में शाह की

111.

जिस दम तड़प के मर गया वो तिफ़्ल ए शीरख़्वार

छोटी सी क़ब्र तेग़ से खोदी ब हाल ए ज़ार

बच्चे को दफ़न करके पुकारा वो ज़ी वक़ार

ऐ ख़ाक ए पाक हुरमत ए मेहमाँ निगाहदार

दामन में रख उसे जो मुहब्बत अली की है

दौलत है फ़ातिमा की अमानत अली की है

112.

ये कह के आए फ़ौज पे तौले हुए हुसाम

आँखें लहू थीं रोने से चेहरा था सुर्ख़ फ़ाम

ज़ेब बदन किए थे ब सद अज़्ज़ ओ एहतिशाम

पैराहन ए मुतह्हर ए पैग़ंबर ए अनाम

हमज़ा की ढाल तेग़ शह ए लाफ़ता की थी

बर में ज़िरह जनाब ए रसूल ए ख़ुदा की थी

113.

रुस्तम था दिरा पोश कि पाखर में राहवार

जर्रार बुर्दबार सुबुक रु वफ़ाशआर

क्या ख़ुशनुमा था ज़ैन ए मुतल्ला ओ नुक़राकार

अकसीर था क़दम का जिसे मिल गया ग़ुबार

ख़ुश ख़ू था ख़ानाज़ाद था दुलदुल नज़ाद था

शब्बीर भी सख़ी थे फ़रस भी जव्वाद था

114.

गर्मी का रोज़ ए जंग की क्योंकर करूँ बयाँ

डर है कि मिस्ल ए शम्मा ना जलने लगे ज़बां

वो लूँ कि अलहज़र वो हरारत कि अलअमाँ

रन की ज़मीं तो सुर्ख़ थी और ज़र्द आसमां

आब ए ख़ुन्क को ख़ल्क़ तरसती थी ख़ाक पर

गोया हवा से आग बरसती थी ख़ाक पर

115.

वो लूँ वो आफ़ताब की हिद्दत वो ताब ओ तब

काला था रंग धूप से दिन का मिसाल ए शब

ख़ुद नहर ए अलक़मां के भी सूखे हुए थे लब

ख़ेमे जो थे हुबाबों के तपते थे सब के सब

उड़ती थी ख़ाक ख़ुश्क था चश्मा हयात का

खौला हुआ था धूप से पानी फ़ुरात का

116.

झीलों से चारपाए ना उठते थे ता बा शाम

मस्कन में मछलियों के समंदर का था मक़ाम

आहू जो काहले थे तो चीते स्याह फ़ाम

पत्थर पिघल के रह गए थे मिस्ल ए मोम ए ख़ाम

सुर्ख़ी उड़ी थी फूलों से सब्ज़ी गयाह से

पानी कुओं में उतरा था साये की चाह से

117.

कोसों किसी शजर में ना गुल थे ना बर्ग ओ बार

एक एक नख़्ल जल रहा था सूरत ए चनार

हँसता था कोई गुल ना लहकता था सब्ज़ाज़ार

कांटा हुई थी सूख के हर शाख़ ए बारदार

गर्मी ये थी कि ज़ीस्त से दिल सब के सर्द थे

पत्ते भी मिस्ल ए चेहरा ए मदक़ूक़ ज़र्द थे

118.

आब ए रवां से मुँह न उठाते थे जानवर

जंगल में छुपते फिरते ताइर इधर उधर

मर्दुम थे सात पर्दों के अंदर अर्क़ में तर

ख़स ख़ाना ए मिज़ा से निकलती ना थी नज़र

गर चश्म से निकल के ठहर जाए राह में

पड़ जाएं लाख आबले पा ए निगाह में

119.

शेर उठते थे ना धूप के मारे कछार से

आहू न मुँह निकालते थे सब्ज़ाज़ार से

आईना मेहर का था मुकद्दर ग़ुबार से

गर्दूं को तप चढ़ी थी ज़मीं के बुख़ार से

गर्मी से मुज़्तरिब था ज़माना ज़मीन पर

भुन जाता था जो गिरता था दाना ज़मीन पर

120.

गिर्दाब पर था शोला ए जव्वाला का गुमाँ

अँगारे थे हुबाब तो पानी शररफ़िशाँ

मुँह से निकल पड़ी थी हर इक मौज की ज़बां

तह में थे सब निहंग मगर थी लबों पे जां

पानी था आग गरमी रोज़ ए हिसाब थी

माही जो सीख़ ए मौज तक आई कबाब थी

121.

आईना ए फ़लक को न थी ताब ओ तब की ताब

छिपने को बर्क़ चाहती थी दामन ए सहाब

सबसे सवा था गर्म मिज़ाजों को इज़तिराब

काफ़ूर ए सुबह ढूँढता फिरता था आफ़ताब

भड़की थी आग गुंबद ए चर्ख़ ए असीर में

बादल छिपे थे सब कुर्राह ए ज़महरीर में

122.

इस धूप में खड़े थे अकेले शह ए उमम

न दामन ए रसूल था न साया ए अलम

शोले जिगर से आह के उठते थे दम ब दम

ऊदे थे लब ज़बान में कांटे कमर में ख़म

बे आब तीसरा था जो दिन मिहमान को

होती थी बात बात में लुकनत ज़बान को

123.

घोड़ों को अपने करते थे सेराब शहसवार

आते थे ऊंट घाट पे बाँधे हुए क़तार

पीते थे आब ए नहर परिंद आ के बे शुमार

सक़्क़े ज़मीं पे करते थे छिड़काव बार बार

पानी का दाम ओ दद को पिलाना सवाब था

पर इब्न ए फ़ातिमा के लिए क़हत ए आब था

124.

सर पर लगाए था पिसर ए साद चतर ए ज़र

ख़ादिम कई थे मुरव्वजा ए जुंबां इधर उधर

करते थे आब पाश मुकर्रर ज़मीं को तर

फ़र्ज़ंद ए फ़ातिमा पे ना था साया ए शजर

वो धूप दश्त की वो जलाल आफ़ताब का

संवला गया था रंग ए मुबारक जनाब का

125.

कहता था इब्न ए साद कि ऐ आसमाँ जनाब

बयत जो कीजिए अब भी तो हाज़िर है जाम ए आब

फ़रमाते थे हुसैन कि ओ ख़ानमाँ ख़राब

दरिया को ख़ाक जानता है इब्न ए बूतुराब

फ़ासिक़ है पास कुछ तुझे इस्लाम का नहीं

आब ए बक़ा हो अब तो मिरे काम का नहीं

126.

कह दूं तो ख़्वान ले के ख़ुद आएं अभी ख़लील

चाहूँ तो सलसबील को दम में करूँ सबील

क्या जाम आब का मुझे तू देगा ओ ज़लील

बेआबरू ख़सीस सितमगर दनी बख़ील

जिस फूल पर पड़े तिरा साया वो बू न दे

खुलवाए फ़स्द तू तो कभी रग लहू न दे

127.

गर जम का नाम लूं तो अभी जाम ले के आए

कौसर यहीं रसूल के अहकाम ले के आए

रूहुल अमीं ज़मीं पे मिरा नाम ले के आए

लश्कर मलक का फ़तह का पैग़ाम ले के आए

चाहूं जो इन्क़िलाब तो दुनिया तमाम हो

उल्टे ज़मीन यूं कि ना कूफ़ा ना शाम हो

128.

फ़रमा के ये निगाह जो की सू ए ज़ुल्फ़िक़ार

थर्रा के पिछले पानों हटा वो सितमशआर

मज़लूम पर सफ़ों से चले तीर बेशुमार

आवाज़ ए कोस ए हर्ब हुई आसमां के पार

नेज़े उठा के जंग पे असवार तुल गए

काले निशां सिपाह ए सह रू में खुल गए

129.

वो धूम तब्ल ए जंग की वो बूक़ का ख़रोश

कर्र हो गए थे शोर से कर्रुबियों के गोश

थर्राई यूं ज़मीं कि उड़े आसमां के होश

नेज़े हिला के निकले सवारान ए दरापोश

ढालें थीं यूं सरों पे सवारान ए शूम के

सहरा में जैसे आए घटा झूम झूम के

130.

लो पढ़ के चंद शेर ए रज्ज़ शाह ए दीं बढ़े

गेती के थाम लेने को रूहुल अमीं बढ़े

मानिंद ए शेर ए नर कहीं ठहरे कहीं बढ़े

गोया अली उलटते हुए आस्तीं बढ़े

जलवा दिया जरी ने अरुस ए मसाफ़ को

मुश्किलकुशा की तेग़ ने छोड़ा गिलाफ़ को

131.

काठी से इस तरह हुई वो शोला ख़ू जुदा

जैसे कनार ए शौक़ से हो ख़ूब रू जुदा

महताब से शुआ जुदा गुल से बू जुदा

सीने से दम जुदा रग ए जां से लहू जुदा

गरजा जो राद अब्र से बिजली निकल पड़ी

महमिल में दम जो घुट गया लैली निकल पड़ी

132.

आए हुसैन यूं कि उक़ाब आए जिस तरह

आहू पे शेर ए शरज़ा ए ग़ाब आए जिस तरह

ताबिंदा बर्क़ सू ए सहाब आए जिस तरह

दौड़ा फ़रस नशेब में आब आए जिस तरह

यूं तेग़ ए तेज़ कौंद गई उस गिरोह पर

बिजली तड़प के गिरती है जिस तरह कोह पर

133.

गर्मी में बर्क़ ए तेग़ जो चमकी शरर उड़े

झोंका चला हवा का जो सन्न से तो सर उड़े

परकाला ए सिपर जो इधर और उधर उड़े

रूहुल अमीं ने साफ़ ये जाना कि पर उड़े

ज़ाहिर निशान ए इस्म ए अज़ीमत असर हुए

जिन पर अली लिखा था वही पर सिपर हुए

134.

जिस पर चली वो तेग़ दोपारा किया उसे

खिंचते ही चार टुकड़े दोबारा किया उसे

वां थी जिधर अजल ने इशारा किया उसे

सख़्ती भी कुछ पड़ी तो गवारा किया उसे

ना ज़ीन था फ़रस पे ना असवार ज़ीन पर

कड़ियाँ ज़िरह की बिखरी हुई थीं ज़मीन पर

135.

आई चमक के ग़ोल पे जब सर गिरा गई

दम में जमी सफ़ों को बराबर गिरा गई

एक एक क़स्र ए तन को ज़मीं पर गिरा गई

सैल आई ज़ोर शोर से जब घर गिरा गई

आ पहुँचा उसके घाट पे जो मर के रह गया

दरिया लहू का तेग़ के पानी से बह गया

136.

इस आब पर ये शोला फ़िशानी ख़ुदा की शान

पानी में आग आग में पानी ख़ुदा की शान

ख़ामोश और तेज़ ज़बानी ख़ुदा की शान

इस्तादा आब में ये रवानी ख़ुदा की शान

लहराई जब उतर गया दरिया चढ़ा हुआ

नेज़ों था ज़ुल्फ़िक़ार का पानी बढ़ा हुआ

137.

क़ल्ब ओ जनाह ओ मैमना ओ मैसरा तबाह

गर्दन कशान ए उम्मत ए ख़ैरुलवरा तबाह

जुम्बां ज़मीं सफ़ें तह ओ बाला परा तबाह

बेजान जिस्म रूह ए मुसाफ़िर सरा तबाह

बाज़ार बंद हो गया झंडे उखड़ गए

फ़ौजें हुईं तबाह मुहल्ले उजड़ गए

138.

अल्लाह रे तेज़ी ओ बुरिश उस शोला रंग की

चमकी सवार पर तो ख़बर लाई तंग की

प्यासी फ़क़त लहू की तलबगार जंग की

हाजत ना सान की थी उसे कुछ ना संग की

ख़ूँ से फ़लक को लाशों से मक़तल को भरती थी

सौ बार दम में चर्ख़ पे चढ़ती उतरती थी

139.

तेग़ ख़िज़ां थी गुलशन ए हस्ती से क्या उसे

घर जिसका ख़ुद उजड़ गया बस्ती से क्या उसे

वो हक़नुमा थी कुफ़्र परस्ती से क्या उसे

जो आप सर बलंद हो पस्ती से क्या उसे

कहते हैं रास्ती जिसे वो ख़म के साथ है

तेज़ी ज़बां के साथ बुरिश दम के साथ है

140.

सीने पे चल गई तो कलेजा लहू हुआ

गोया जिगर में मौत का नाख़ुन फ़रु हुआ

चमकी तो अलअमान का ग़ुल चार सू हुआ

जो उसके मुँह पे आ गया बे आबरू हुआ

रुकता था एक वार ना दस से ना पाँच से

चेहरे स्याह हो गए थे उसकी आँच से

141.

बुझ बुझ गईं सफ़ों पे सफ़ें वो जहां चली
चमकी तो उस तरफ़ इधर आई वहां चली
दोनों तरफ़ की फ़ौज पुकारी कहाँ चली
इसने कहा यहां वो पुकारा यहां चली
मुँह किस तरफ़ है तेग़ ज़नों को ख़बर ना थी
सर गिर रहे थे और तनों को ख़बर ना थी

142.

दुश्मन जो घाट पर थे वो धोए थे जां से हाथ
गर्दन से सर अलग था जुदा थे इनां से हाथ
तोड़ा कभी जिगर कभी छेदा सिनां से हाथ
जब कट के गिर पड़ें तो फिर आएं कहाँ से हाथ
अब हाथ दस्तयाब नहीं मुँह छुपाने को
हाँ पांव रह गए हैं फ़क़त भाग जाने को

143.

अल्लाह रे ख़ौफ़ तेग़ ए शह ए कायनात का
ज़हरा था आब ख़ौफ़ के मारे फ़ुरात का
दरिया पे था ये हाल हर इक बद सिफ़ात का
चारा फ़रार का था ना यारा सबात का

ग़ुल था कि बर्क़ गिरती है हर दिरा पोश पर

भागो ख़ुदा के क़हर का दरिया है जोश पर

144.

हर चंद मछलियाँ थीं ज़िरह पोश सर बसर

मुँह खोले छुपती फिरती थीं लेकिन इधर उधर

भागी थी मौज छोड़ के गिर्दाब की सिपर

थे तह नशीं निहंग मगर आब थे जिगर

दरिया ना थमता ख़ौफ़ से इस बर्क़ ताब के

लेकिन पड़े थे पानों में छाले हुबाब के

145.

आया ख़ुदा का क़हर जिधर सन्न से आ गई

कानों में अलअमाँ की सदा रन से आ गई

दो करके ख़ुद ज़ीन पे जौशन से आ गई

खिंचती हुई ज़मीन पे तौसन से आ गई

बिजली गिरी जो ख़ाक पे तेग़ ए जनाब की

आई सदा ज़मीन से या बूतुराब की

146.

पिस पिस के कश्मकश में कमानदार मर गए

चिल्ले तो सब चढ़े रहे बाज़ू उतर गए

गोशे कटे कमानों के तीरों के पर गए

मक़तल में हो सका ना गुज़ारा गुज़र गए

दहशत से होश उड़े हुए थे मुर्ग़ ए वहम के

सोफ़ार खोल देते थे मुँह सहम सहम के

147.

तीर अफ़गनी का जिनकी हर इक शहर में था शोर

गोशा कहीं ना मिलता था उनको सिवाए गोर

तारीक शब में जिनका निशाना थी चश्म ए मोर

लश्कर में ख़ौफ़ ए जां ने उन्हें कर दिया था कोर

होश उड़ गए थे फ़ौज ए ज़लालत निशान के

पैकां में ज़ह को रखते थे सोफ़ार जान के

148.

सफ़ पर सफ़ें परों पे परे पेश ओ पस गिरे

असवार पर सवार फ़रस पर फ़रस गिरे

मुख़्बिर पे पैक पैक पे मर कर असस गिरे

उठकर ज़मीं से पाँच जो भागे तो दस गिरे

टूटे परे शिकस्त बिना ए सितम हुई

दुनिया में इस तरह की भी उफ़्ताद कम हुई

149.

ग़ुस्से था शेर ए शरज़ा ए सहरा ए कर्बला

छोड़े थे गुर्ग मंज़िल ओ मावा ए कर्बला

तेग़ ए अली थी मारका आरा ए कर्बला

ख़ाली ना थी सरों से कहीं जा ए कर्बला

बस्ती बसी थी मुर्दों की क़र्ये उजाड़ थे

लाशों की थी ज़मीन सरों के पहाड़ थे

150.

ग़ाज़ी ने रख लिया था जो शमशीर के तले

थी तुरफ़ा कश्मकश फ़लक ए पीर के तले

चिल्ले सिमट के जाते थे ज़हगीर के तले

छुपती थी सर झुका के कमां तीर के तले

इस तेग़ ए बे दरीग़ का जलवा कहाँ ना था

सहमे थे सब पे गोशा ए अमन ओ अमाँ ना था

151.

चारों तरफ़ कमान ए क्यानी की वो तरंग

रह रह के अब्र ए शाम से वो बारिश ए ख़दंग

वो शोर ए सहिया ए फ़रस ए इबलक़ ओ सरंग

वो लूं वो आफ़ताब की ताबिंदगी वो जंग

फिंकता था दश्त ए कीं कोई दिल था ना चैन से

उस दिन की ताब ओ तब कोई पूछे हुसैन से

152.

सक़्क़े पुकारते थे ये मशकें लिए उधर

बाज़ार ए जंग गर्म है ढलती है दोपहर

प्यासा जो हो वो पानी से ठंडा करे जिगर

मशकों पे दौड़ दौड़ के गिरते थे अहल ए शर

क्या आग लग गई थी जहान ए ख़राब को

पीते थे सब हुसैन तरसते थे आब को

153.

गर्मी में प्यास थी कि फुंका जाता था जिगर

उफ़ उफ़ कभी कहा कभी चेहरे पे ली सिपर

आँखों में टीस उठी जो पड़ी धूप पर नज़र

झपटे कभी इधर कभी हमला किया उधर

कसरत अर्क़ के क़तरों की थी रू ए पाक पर

मोती बरसते जाते थे मक़तल की ख़ाक पर

154.

सेराब छुपते फिरते थे प्यासे की जंग से

चलती थी एक तेग़ ए अली लाख रंग से

चमकी जो फ़र्क़ पर तो निकल आई तंग से

रुकती ना थी सिपर से ना आहन ना संग से

ख़ालिक़ ने मुँह दिया था अजब आब ओ ताब का

ख़ुद उसके सामने था फफोला हुबाब का

155.

सहमे हुए थे यूं कि किसी को ना थी ख़बर

पैकां किधर है तीर का सोफ़ार है किधर

मर्दुम की कश्मकश से कमानों को था ये डर

गोशों को ढूँढती थीं ज़मीं पर झुकाए सर

तरकश से खींचे तीर कोई ये जिगर ना था

सेसर पे जिसने हाथ रखा तन पे सर ना था

156.

घोड़ों की वो तड़प वो चमक तेग़ ए तेज़ की

सौ सौ सफ़ें कुचल गईं जब जस्त ओ ख़ेज़ की

लाखों में थी ना एक को ताक़त सितेज़ की

थी चार सिम्त धूम गुरेज़ा गुरेज़ की

आरी जो हो गई थीं वो सब ज़ुल्फ़िक़ार से

तेग़ों ने मुँह फिरा लिए थे कारज़ार से

157.

घोड़ों की जस्त ओ ख़ेज़ से उठा ग़ुबार ए ज़र्द

गर्दूं में मिस्ल ए शीशा ए साअत भरी थी गर्द

तोदा बना था ख़ाक का मीना ए लाजवर्द

कोसों स्याह ओ तार था सब वादी ए नबर्द

पिनहां नज़र से नय्यर गेती फुरोज़ था

ढलती थी दोपहर पे ना शब थी ना रोज़ था

158.

अल्लाह रे लड़ाई में शौकत जनाब की

सांवलाए रंग में थी ज़िया आफ़ताब की

सूखे वो लब कि पंखुड़ियां थीं गुलाब की

तस्वीर ज़ुल्जनाह पे थी बूतुराब की

होता था ग़ुल जो करते थे नारे लड़ाई में

भागो कि शेर गूंज रहा है तराई में

159.

फिर तो ये ग़ुल हुआ कि दुहाई हुसैन की

अल्लाह का ग़ज़ब है लड़ाई हुसैन की

दरिया हुसैन का है तराई हुसैन की

दुनिया हुसैन की है ख़ुदाई हुसैन की

बेड़ा बचाया आपने तूफ़ाँ से नूह का

अब रहम वास्ता अली अकबर की रूह का

160.

अकबर का नाम सुन के जिगर पर लगी सिनां
आँसू भर आए रोक ली रहवार की इनाँ
मुड़कर पुकारे लाश ए पिसर को शह ए ज़माँ
तुमने ना देखी जंग ए पिदर ऐ पिदर की जां
क़समें तुम्हारी रूह की ये लोग देते हैं
लो अब तो ज़ुल्फ़िक़ार को हम रोक लेते हैं

161.

चिल्लाया हाथ मार के ज़ानू पे इब्न ए साद
ऐ वा फ़ज़ीहता ये हज़ीमत ज़फ़र के बाद
ज़ेबा दिलावरों को नहीं है ख़िलाफ़ ए वाद
इक पहलवां ये सुनते ही गरजा मिसाल ए राद
नारा किया कि करता हूँ हमला इमाम पर
ऐ इब्न ए साद लिख ले ज़फ़र मेरे नाम पर

162.

बाला क़द ओ कुल्फ़त ओ तनौमंद ओ ख़ीरासर
रोईं तन ओ स्याह दरुं आहनी कमर
नावक पयाम मर्ग के तरकश अजल का घर
तेग़ें हज़ार टूट गयीं जिस पे वो सिपर

दिल में बदी तबीअत ए बद में बिगाड़ था

घोड़े पे था शक़ी कि हवा पर पहाड़ था

163.

साथ उसके और उसी क़द ओ क़ामत का एक यल

आँखें कबूद रंग सयह अबरुओं पे बल

बदकार ओ बदशआर ओ सितमगार ओ पुरदग़ल

जंग आज़मा भगाए हुए लश्करों के दल

भाले लिए कसे हुए कमरें सितेज़ पर

नाज़ाँ वो ज़र्ब ए गुर्ज़ पे ये तेग़ ए तेज़ पर

164.

खिंच जाये शक्ल ए हर्ब वो तदबीर चाहिए

दुश्मन भी सब मुक़िर हों वो तक़रीर चाहिए

तेज़ी ज़बां में सूरत ए शमशीर चाहिए

फ़ौलाद का क़लम दम ए तहरीर चाहिए

नक़्शा खिंचेगा साफ़ सफ़ ए कारज़ार का

पानी दवात चाहती है ज़ुल्फ़िक़ार का

165.

लश्कर में इज़तिराब था फ़ौजों में खलबली

सावंत बेहवास हिरासाँ धनी बली

डर था कि लो हुसैन बढ़े तेग़ अब चली

ग़ुल था उधर हैं मर्हब ओ अंतर इधर अली

कौन आज सर बलंद हो और कौन पस्त हो

किसकी ज़फ़र हो देखिए किसकी शिकस्त हो

166.

आवाज़ दी ये हातिफ़ ए ग़ैबी ने तब कि हाँ

बिस्मिल्लाह ऐ अमीर ए अरब के सरवर ए जां

बैठे दुरुस्त हो के फ़रस पे शह ए ज़माँ

उठी अली की तेग़ दो दम चाटकर ज़बां

वां से वो शोर बख़्त बढ़ा नारा मार के

पानी भर आया मुँह में इधर ज़ुल्फ़िक़ार के

167.

लश्कर के सब जवाँ थे लड़ाई में जी लड़ाए

वो बदनज़र था आँखों में आँखें उधर गड़ाए

ढालें लड़ीं सिपाह की या अब्र गड़गड़ाए

ग़ुस्से में आके घोड़े ने भी दाँत कड़कड़ाए

मारी जो टाप डर के हटे हर लईं के पांव

माही पे डगमगा गए गाव ए ज़मीं के पांव

168.

नेज़ा हिला के शाह पर आया वो ख़ुद पसंद

मुश्किलकुशा के लाल ने खोले तमाम बंद

तीर ओ कमां से भी ना हुआ कुछ वो बहरामंद

चिल्ला उधर खिंचा कि चली तेग़ ए सर बलंद

वो तीर कट गए जो दर आते थे संग में

गोशे ना थे कमां में ना पैकां ख़दंग में

169.

ज़ालिम उठा के गुर्ज़ को आया जनाब पर

तारी हुआ ग़ज़ब ख़लफ़ ए बूतुराब पर

मारा जो हाथ पांव जमा कर रिकाब पर

बिजली गिरी शक़ी के सर ए पुरइताब पर

बद हाथ में शिकस्त ज़फ़र नेक हाथ में

हाथ उड़ के जा पड़ा कई हाथ एक हाथ में

170.

कुछ दस्त पाचा हो के चला था वो नाबकार

पंजे से पर ए अजल के कहाँ जा सके शिकार

वां उसने बाएं हाथ में ली तेग़ ए आबदार

याँ सर से आई पुश्त के फ़िक़रों पे ज़ुल्फ़िक़ार

क़ुरबान तेग़ ए तेज़ ए शह ए नामदार के

दो टुकड़े थे सवार के दो राहवार के

171.

फिर दूसरे पे गुर्ज़ उठा कर पुकारे शाह

क्यों ज़र्ब ए ज़ुल्फ़िक़ार पे तूने भी की निगाह

सरशार था शराब ए तकब्बुर से रू स्याह

जाता कहाँ कि मौत तो रोके हुए थी राह

ग़ुल था उसे अजल ने बढ़ाया जो घेर के

लो दूसरा शिकार चला मुँह में शेर के

172.

आता था वो कि अस्प ए शह ए दीं पलट पड़ा

साबित हुआ कि शेर ए गुरिसना झपट पड़ा

तेग़ा शक़ी ने ढाल पे मारा तो पट पड़ा

ज़रबत पड़ी कि गुम्बद ए दव्वार फट पड़ा

पेवंद ए सदर ए ज़ीं जसद ओ फ़र्क़ हो गया

घोड़ा ज़मीं में सीने तलक ग़र्क़ हो गया

173.

परियों से क़ाफ़ छूट गया और जुनूँ से घर

शेरों से दश्त गुर्ग से बन अज़्दरों से दर

शाहीन ओ कबक छुप गए इक जा मिला के सर

उड़कर गिरे जज़ीरों में दरिया के जानवर

सिमटे पहाड़ मुँह को जो दामन से ढाँप के

सीमुर्ग़ ने गिरा दिए पर काँप काँप के

174.

आई निदा ए ग़ैब कि शब्बीर मरहबा

इस हाथ के लिए थी ये शमशीर मरहबा

ये आबरू ये जंग ये तौक़ीर मरहबा

दिखला दी माँ के दूध की तासीर मरहबा

ग़ालिब किया ख़ुदा ने तुझे कायनात पर

बस ख़ात्मा जिहाद का है तेरी ज़ात पर

175.

बस अब ना कर वग़ा की हवस ऐ हुसैन बस

दम ले हवा में चंद नफ़स ऐ हुसैन बस

गर्मी से हाँपता है फ़रस ऐ हुसैन बस

वक़्त ए नमाज़ ए अस्र है बस ऐ हुसैन बस

प्यासा लड़ा नहीं कोई यूं इज़्दिहाम में

अब एहतिमाम चाहिए उम्मत के काम में

176.

लब्बैक कह के तेग़ रखी शह ने मियान में

पलटी सिपाह आई क़यामत जहान में

फिर सरकशों ने तीर मिलाए कमान में

फिर खुल गए लिपट के फरहरे निशान में

बेकस हुसैन ज़ुल्म शआरों में घिर गए

मौला तुम्हारे लाख सवारों में घिर गए

177.

सीने पे सामने से चले दस हज़ार तीर

छाती पे लग गए कई सौ एक बार तीर

पहलू के पार बरछियाँ सीने के पार तीर

पड़ते थे दस जो खींचते थे तन से चार तीर

यूं थे ख़दंग ज़िल्ल ए इलाही के जिस्म पर

जिस तरह ख़ार होते हैं साही के जिस्म पर

178.

चलते थे चार सिम्त से भाले हुसैन पर

टूटे हुए थे बर्छियों वाले हुसैन पर

क़ातिल थे ख़ंजरों को निकाले हुसैन पर

ये दुख नबी की गोद के पाले हुसैन पर

तीर ए सितम निकालने वाला कोई ना था

गिरते थे और संभालने वाला कोई ना था

179.

लाखों में एक बेकस ओ दिलगीर हाय हाय

फ़र्ज़ंद ए फ़ातिमा की ये तौक़ीर हाय हाय

भाले वो और पहलू ए शब्बीर हाय हाय

वो ज़हर में बुझाए हुए तीर हाय हाय

ग़ुस्से में थे जो फ़ौज के सरकश भरे हुए

ख़ाली किए हुसैन पे तरकश भरे हुए

180.

वो गिर्द थे जो भागते फिरते थे वक़्त ए जंग

इक संगदिल ने पास से मारा जबीं पे संग

सदमे से ज़र्द हो गया सिब्त ए नबी का रंग

माथे पे हाथ था कि गले पर लगा ख़दंग

थामा गला जनाब ने माथे को छोड़ के

निकला वो तीर हलक़ ए मुबारक को तोड़ के

181.

लिखा है तीन भाल का था नावक ए सितम

मुँह खुल गया उलट गई गर्दन रुका जो दम

खींची सिरी गले की तरफ़ से बा चश्म ए नम

भालें निकालीं पुश्त की जानिब से हो के ख़म

उबला जो ख़ूँ निकलता हुआ दम ठहर गया

चुल्लू रखा जो ज़ख़्म के नीचे तो भर गया

182.

दुश्मन था शह का आवर ए सलमी अदु ए दीं

सर पर लगाई तेग़ कि शक़ हो गई जबीं

मारी जिगर पे इब्न ए अनस ने सिनान ए कीं

भागा गड़ा के कोख में बरछी को इक लईं

घोड़े पे डगमगा के जो हज़रत ने आह की

थर्रा गई ज़रीह रिसालत पनाह की

183.

गिरते हैं अब हुसैन फ़रस पर से है ग़ज़ब

निकली रिकाब पा ए मुतह्हर से है ग़ज़ब

पहलू शिगाफ़ता हुआ ख़ंजर से है ग़ज़ब

ग़श में झुके अमामा गिरा सर से है ग़ज़ब

क़ुरआन रेहल ए ज़ीं से सर ए फ़र्श गिर पड़ा

दीवार ए काबा बैठ गई अर्श गिर पड़ा

184.

जंगल से आई फ़ातिमा ज़हरा की ये सदा

उम्मत ने मुझको लूट लिया वा मोहम्मदा

इस वक़्त कौन हक़ ए रिफ़ाक़त करे अदा

है है ये ज़ुल्म और दो आलम का मुक़तदा

उन्नीस सौ हैं ज़ख़्म तन ए चाक चाक पर

ज़ैनब निकल हुसैन तड़पता है ख़ाक पर

185.

पर्दा उलट के बिंत ए अली निकली नंगे सर

लरज़ां क़दम ख़मीदा कमर ग़र्क़ ए ख़ूँ जिगर

चारों तरफ़ पुकारती थी सर को पीट कर

ऐ कर्बला बता तिरा मेहमान है किधर

अम्मां क़दम अब उठते नहीं तिश्नाकाम के

पहुँचा दो लाश पर मिरे बाज़ू को थाम के

186.

इस वक़्त सब जहां मिरि आँखों में है स्याह

लोगो ख़ुदा के वास्ते मुझको बताओ राह

सय्यद किधर तड़पता है अम्मां किधर हैं आह

किस सिम्त है नबी के नवासे की क़त्लगाह

शोले दिल ओ जिगर से निकलते हैं आह के

ये कौन नाम लेता है मेरा कराह के

187.

किसने सदा ये दी कि बहन इस तरफ़ ना आओ
बस अब सफ़र क़रीब है लिल्लाह घर में जाओ
अब डूबती है आल ए रसूल ए ख़ुदा की नाव
या मुर्तुज़ा ग़रीबों के बेड़े को तुम बचाओ
अब छोड़ियो ना दश्त ए बला में हुसैन को
या फ़ातिमा छिपा लो रिदा में हुसैन को

188.

बिंत ए अली तो पीटती फिरती थी नंगे सर
कटता था नूर ए चश्म ए अली का गला उधर
ज़ैनब को मना करते थे हर चंद अहल ए शर
लेकिन वो दौड़ी जाती थी थामे हुए जिगर
पहुँची जो क़त्लगाह में इस रोक टोक पर
देखा सर ए हुसैन को नेज़े की नोक पर

189.

नेज़े के नीचे जा के पुकारी वो सोगवार
सय्यद तिरि लहू भरी सूरत के मैं निसार
है है गले पे चल गई भैय्या छुरी की धार
भूले बहन को ऐ असद ए हक़ की यादगार

सदक़े गई लुटा गए घर वादा गाह में

जुंबिश लबों को है अभी ज़िक्र ए आला में

190.

भैय्या सलाम करती है ख़्वाहर जवाब दो

चिल्ला रही है दुख़तर ए हैदर जवाब दो

सूखी ज़बां से बहर ए पयम्बर जवाब दो

क्योंकर जियेगी ज़ैनब ए मुज़्तर जवाब दो

जुज़ मर्ग दर्द ए हिज्र का चारा नहीं कोई

मेरा तो अब जहां में सहारा नहीं कोई

191.

भैय्या मैं अब कहाँ से तुम्हें लाऊं क्या करूं

क्या कह के अपने दिल को मैं समझाऊं क्या करूं

किसकी दुहाई दूं किसे चिल्लाऊं क्या करूं

बस्ती पराई है मैं किधर जाऊं क्या करूं

दुनिया तमाम उजड़ गई वीराना हो गया

बैठूं कहाँ कि घर तो अज़ाख़ाना हो गया

192.

है है तुम्हारे आगे ना ख़्वहार गुज़र गई

भैय्या बताओ क्या तह ए ख़ंजर गुज़र गई

आई सदा ना पूछो जो हम पर गुज़र गई

सद शुक्र जो गुज़र गई बेहतर गुज़र गई

सर कट चुका हमें तो अलम से फ़राग़ है

गर है तो बस तुम्हारी जुदाई का दाग़ है

193.

घर लूटने को आएगी अब फ़ौज ए नाबकार

कहियो ना कुछ ज़बां से बजुज़ शुक्र ए किरदगार

ख़ेमे में जब कि आग लगा दें सितमशआर

रहियो मिरि यतीम सकीना से होशियार

बेज़ार है वो ख़स्ता जिगर अपनी जान से

बाँधे ना कोई उसका गला रेस्मान से

194.

बस ऐ अनीस ज़ोफ़ से लरज़ां है बंद बंद

आलम में यादगार रहेंगे ये चंद बंद

निकले क़लम से ज़ोफ़ में क्या क्या बलंद बंद

आलम पसंद लफ्ज़ हैं सुल्ताँ पसंद बंद

ये फ़सल और ये बज़्म ए अज़ा यादगार है

पीरी के वलवले हैं ख़िज़ां की बहार है